

ASHA ARCHIVES 3621

१ कालवकुम्भाप्रामुखादिभिः ॥

२ कालवकुम्भाप्रामुखादिभिः ॥

२

ASHA ARCHIVES 3621

গুণসিদ্ধি

ॐ नमः श्री कालवजाय ॥ सर्वकृतिविमलमुखा मयेकमाना अवेष्टे नमः वनस्युत्तम
याविरुद्धा मूर्त्तयि या जनय माहि जनं जिना तानस्मै नमः ॥ १ ॥ अथ गतिगुह्यं गान्धर्व ॥ २ ॥
ॐ नमः श्रीगुरुनाथं जनानां यथावद्वन्द्यं ॥ लिखाम्यस्य यथास्मार्थं कालवकाचनं कर्म ॥ गणदीपा
वनश्रीमत्यनमादि वृद्धं गुरुनाजाकारं लिखाम ॥ यान्त्रिकं यमयाया ॥ यमावावमनकि
यायकृत्य मूलगुह्यं नरकासादि वन्द्यं ॥ जलस्नानं नमः ॥ ३ ॥ स्नानं वन्द्यं यथायथं
यायन वन्द्यं गुरुस्नानं मावायस्य वज्रिने ॥ सककात्रमयवाकं दवं गानाधनयिना दिनि
॥ नमः मनुस्नानं कुर्यात् ॥ नथ ॥ जलस्नानं नमः ॥ ४ ॥ स्नानं नमः ॥ नमः ॥
लयनिगुह्यं कुर्यात् ॥ नथ ॥ स्नानं नमः ॥ ५ ॥ स्नानं नमः ॥ ६ ॥ स्नानं नमः ॥

वीनसो गानादवनाचनमिति ॥ अथ स्नानं नमः ॥ ७ ॥ यथादि जातमायुः स्यायिना ॥ ८ ॥ सर्व
थागना ॥ ९ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ १० ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ ११ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ १२ ॥
गतादि अथ समग्रियं ॥ १३ ॥ ॐ श्रीगुरुवा ॥ १४ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ १५ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ १६ ॥
यायिना ॥ नथ ॥ १७ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ १८ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ १९ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ २० ॥
विधिं नमः ॥ २१ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ २२ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ २३ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ २४ ॥
मायुर्कं गुरुवा ॥ २५ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ २६ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ २७ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ २८ ॥
गुरुवा ॥ २९ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ ३० ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ ३१ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ ३२ ॥
दीनं नमः ॥ ३३ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ ३४ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ ३५ ॥ यथादि स्नानं यथायिना ॥ ३६ ॥

ध्यामनावायविभु उरु नातिमूख ४ व द लभा सादिकं कृ यो न । न धा वल दू का ल व
 कु न न नातिन का या वि म ल य र या उं अ ४ दं द ४ दं क ४ ॥ य रू या या ल म क का य वा कि
 रू रू ना धि य न म म का य वा कि रू रू ना व ज व जा म न स र व रू न र रू क थ धा ला य न
 ना दि क नि ४ स र व स वा दा ॥ ४० नी दं म म म वा य उ रू या य वि वं का न य वि न न व ज व द
 म सु र् ल वा द न क ला व रू धा या न म रु न न स ना रू य मा न ल या द न ल वा कं या व ल स र ना न
 स रु य क रू क व रू ल य म रु नि वा ना न । त न ४ ग म क व य ना ल ना न धा या न ॥ ४१ नी द रू
 व नि ॥ त न ध न व उं स र व रू द्वा स र व रू मी ४ स र व रू द्वा दं म मि ल वा य न ना ल ल वा उं
 गु क म मि ता रू क ४ अ ४ न क व ल स र व द द य रू क रू म मा य सि दि न ना रू द ४ वा न

^म
 वे ना व नं उ रू य रं धा म का र ४ य रू क ४ ना लं व ज स ल वा स दि नि । त न ध न न उं द ४ स र
 म ना ज मा न क रू म क न व ज नी क द ४ रू क द म म क न सि ४ ध य स वा दा । अ न न म रु द
 य न स य नं क न द क न म रू य दि नि ॥ ४२ अ वा ना दि ल वा ना क ४ य रू द म स र ना ४ ॥ अ
 ४ ३ ४ अ य ४ अ न ड अ ल रू य न व ल ॥ ४३ नि वा म क ला कु लि स र व स धि य स वा ४ क नि
 धा म ल य रू दि य ॥ ४४ नि दं क ल व रू क रू रू द व रू दा न ल क ना रू ध रू नी य य रू या व म ।
 ला वा ना या दा अ ल ड अ न रू क ४ ३ ४ अ रू अ ॥ ४५ नि य धि य दि क म द ॥ त ना द स
 सं य रू दं का र ना ले व रू क रू क या म धा धा ला त न स र व ड क ना रू द ४ य रू ४
 क व रू म द म ध य दि नि ॥ ४६ ना रू धा दा न ल वा द रू ल न रू य रू न मा ल ना न सं य

मयि न। नमा ॐ दं मरु मूर्त्ति नयन। ॐ आ ४ हं हा ४ हं क ४ कायवा किल ह्वा नाधियन
 वज्रको यममको यवा किल ह्वा न वं वज्रका यस्व हा वं वृ २ स्वा हा॥ नमा ४ हं का नी
 ॐ सर्वमथागत वज्रकाय स्व हा वा लको दं मिनि काय वा किल ह्वा न नि ४ ह्वा ४ नाग
 ४ य ह्वा ल ना सं क ला य अ ल ॐ दं न्या सं क प्रा नि क ला ह्यां सर्व दं ह्वा ४ ह्वा ४ य म न द द य
 ॐ दं द द या य न म ४॥ मि न मि ॐ दं मि न म म हा॥ मि सा यो ॐ दं मि सा य वा व टा स वा ४
 ॐ दं क व वा य ह्वा ॐ दं य द स्ता ह्यां सर्व दं ह्वा ४ ह्वा ४ न। ॐ दं न ना य व व न न ४ ॐ दं अ म्मा य
 द ट सर्व दं क न क न्या ४ ह्वा ४ मि का या य ह्वा वा म या अ म्मा य द कि न या य म व र्म ॥ नम ४
 सर्व मथागत वज्रकाय मि न मि र वा क व व न ना ४ वज्र म उ दं न्या वि धि नि मि ॥ ॥ नम ४
 न द क म ल म थ नि न गं हा सु दृ ४ सक ल म्मा दू द य का न न म म्मा व व द ल क ग म व व न वि व
 न

यमना मा नी या न रि म म ना य म यि रा व स हा व प्र हा स्व नं वा व दा व न वि रु न वि वि न्य
 न ह्मं अ टि मि ग्री का ल व क नू व मा लान र्म मि म थि का य ॥ ॐ सर्व वि द्या नू सा न य ह्मं ॥ ॐ
 ल्य न न कू क मा दि स म चि न नि र्म ल ज न म व लान ल द वा म गु ल कू यो न ॥ न थो व य न सा दि
 कू द कू क मा नू हा गा ना यो रा म या म ना यि वा र्म वी का प्रा मि न ४ गु क्ता कू यो म गु ल कू क मा
 ॥ न थो दा नू ज वा मि ला य द व रु न सु द ह्म मा ४ का व का लि न म्मा दू स्य र्म क ल वा व व ना व न मि
 ति म गु ल व रु न र्म कू यो न। न थो व रु न्मा द ४ यू न ना र्थ दि का य वा किल म गु ल ॥ व रु न र्म व
 गु दानं व रु न्मा व रु न्मा वि र्म ॥ ॐ मि ॥ ॐ म गु ल व रु न का ल। दानं ल म य रु ना व रु नि र्म
 मा र्म व रु मा रु ना। का कि कू क वि वि नि का य न य न वी यो डि या आय नं। यो नं न क द म

कचिर्ल कनर्ग प्रह्लासलदा ह्य नानमाया नमिना। य उ व न ह न कृत्वा म न म तु लं ॥ ह व
 निक न क व ह ४ सर्व नो ग वि मू क ४ म न म नू न वि गि ह्य च द वे द्वा किक नि ४ ध न के न क
 समु द्ध मा य न नो ग वं ह। सु ग न व न गृ ह स्मि को य क म्मो निक लो य नू सं सा ग थ द्य यं य
 म ॥ न त ४ उ व ज ल ख ह ४ न नि म न न न ल क न य ४ न म तु ल म थ य म्म द ल्वा ॥ उं ऊ
 ४ ह्वा ह नि क लं य कालो ॥ उं म ल ख सर्व न थ ग मा अ धि म्म कृत्वा ह नि ल खाने म धि
 नि ह न ॥ न न य न ज का ग म तु लो द न व लि वा द्वा दि म तु ल न नु ह्य य नि य टि न उं
 का व नि य त्रं शि यू द मा ध न म तु ल सा ध न य द सं गृ हा क के ल क ध सा स न स हि न म व
 ला क य नान न स व द्य यं का न य नि ध न न का ह्द ल क म ल का ह्म का य नि ऊं का न य नि

२ धर्म भा गो लि ना वृद्ध

न न व नु म तु ल ग न ह्म का न य नि ध न नी ल कू लि (म ह्म नि म काला जाला कू ल मा न व लाना
 कू लि न स क ल दि म तु ल म व ला क म न सा र ग व न मा वा ह य न। न थ न य न मा दि क ह्म नि
 व जारु ह्य रा वि न ४। सर्व य य गु हो य क चि ल ना वा ह य ल न ४ ह्म न न म्मि म य सर्व स्तं ध
 म्म ला दि ल क धां। ना नो व ह्म म य ल्को न स स्मि र्म म तु ल न य ॥ आ का श म न सा थ्वा लो सं व द्ध
 म तु ला ल्म क मि नि ॥ न मा ल ला ट क ह्म द य ना रि ह्म न य क म ह्म ऊं ऊ ४ ऊं ऊ ४ ऊं नि गो उं
 ऊ ४ ह्म दा ४ ह्म नि नि य त्र ध र्म ग र्ध ध र्म ग गु चि का म गि क ल वृ क्को य वा क्ति ह्म न स
 नू या चि रा व व ज मा ला दि का ४ ह्म ल य न। न थ वा व ज मा ला द या न का ४ ह्म न य ल य या
 द या न। व ज ला ग्म दि का ४ म न म ला चि का म (ह द्वा म्म ल वा या दि का ४ न का ४ ह्म न य द

मर्मस्त्रिभुजशरुसुवाद्यादिकाः सर्वाः स्फुल्लयद्धर्मगतिं नशाः वदुन क्रवलेयुक्तं रुना
उल्लिख्युटं यूनानि मस्कानं मुखं नं रुत्वा यूनानां धवति इव दं नं ॥ अगमस्वगुरुगालु
नयं दद्याच्चमपुलाः नृणां ॥ नवमानीयाधनमपुल यथास्नानं कावेवकादिदं वनागर्हीतिव
मयुर्वदहं यस्यामवसायं उं श्रीकालवकायसयनिवाजा नमः ॥ रुत्वनतयस्याऊर्लिमपु
लमध्यादत्वा ॥ उं आः रुं हाः ॥ श्रीकालवकायं धनुकं नसयनिवाजा ऊर्ध्वमिति रुत्वं मव न
दाहव रुत्वनतार्थदद्यात् ॥ यार्थं प्रति रुत्वं रुत्वा पादं दद्यात् ॥ नत रुत्वं यथादयुक्ता न नादि कं
कुर्यात् ॥ नथव ॥ शुद्धं गंतव्यं लं रुत्वा युष्माद्युना मरुगता ॥ युष्माकमपुलं रुत्वा युजयित्वा सुयुः
युक्ते शोकाय वाञ्छितं मरुगदद्यादद्योदि मपुला ॥ यदयुक्ता न रुत्वा यूनानां वसनं मुखं

नि ॥ नना रगावच्युनना नत ययम नगं रुत्वा ॥ नथव ॥ आसनस्त्रिभुजयित्वा नं द्यायामाया
यमं किनायादयुक्ता न रुत्वा रुता ऊर्लिख्युटं रुत्वा ॥ वृद्धं धर्मकं संघं रुत्वा नगं गच्छति
सो गमाशा रुत्वा नथानमा वृद्धाय गुनव नमा धर्मायता नशा नत रुत्वा यमदहं म श्रित्या
यिसनं नमः ॥ नृयि (हा) नृयि (हा) म सं युग्म रुत्वा न धवति ना धर्माय विन नागं सं द्या
यमदहं म नमः ॥ वृद्धा नतं शुभं यस्मा धर्मा नतं यमं सुखं ॥ सं द्या नतं यमं ॥ यार्थं ना नयन
रुवसाग नात ॥ वृद्धा नां यूनानां नादि रुत्वं रुत्वा याम् रुत्वं ॥ नृमाद जगत्पुन्यं वृद्धं वाक्ष्ये
दधमनशा ॥ आ वाक्ष्ये नगं यामि वृद्धं धर्मकं रुत्वं ॥ वाक्ष्ये विरुक्ता ना मयं रुत्वा नाथं वि
सिद्धं य ॥ दगना नां सर्वयाया धर्मं युग्म नां चानूमाद नां ॥ उयवा संक निष्ठा मि आर्या रुत्वा

क्रिकयावधं॥युग्यवृद्धेविहास्यामिमद्यंसा नसकमेधुनां॥ब्रह्मसार्धवदुर्दल्य॥४॥वृष्ट
 मायांविमुक्ति॥॥नागद्वययेमादवमानमिष्यीयेसत्तवी॥विषवद्वर्जयिष्यामि
 स्वयनाद्यादहनुकं॥सर्वीकृगलकस्मीदिनकत्रिष्यामिसर्वदा॥दानयययदास्यामि
 पूग्यहानहलोकय॥चतुर्वृकविहानाधविदत्रिष्यामिनामिष॥वतुर्विमानसंगुहं
 कत्रिष्याविलेभनन॥संवृद्धवाधिसत्तानां कत्रिष्यामिनद्यांक्रिया॥नाकसपुनउका
 नांवरुयिष्यामिसामिषी॥समयावाधिसत्तानां कत्रिष्यामिदिनयुमि॥नकत्रिष्यादा
 यानांकाक्षनांवलिराकुं॥वाधिवर्थाकत्रिष्यामिबृद्धीवविगायनाद्वक्त्र
 दवदल्यानांमहाविस्मयकात्रिषी॥दशयानमिनावा॥॥युवयित्वाजिनोत्रसशर

३ ग x

विष्यामिनावृद्धावर्मवजंयुवर्लका॥वाधिविलेसमूल्याद्यवउरिहृविस्त्रिभ
 हासत्तानिमकुयिष्यामिबृद्धतामृगहृकय॥॥मिजुदियागं॥॥ममावतमा
 नरुन॥प्रतिधनमिदंरुलोस्वक्यादिकस्वस्त्रि॥संवृद्धास्वधरुगाकस्यादवन
 मात्ररुदिमि॥मनश्चयथमविलेयुजांयुक्थीमि॥मथावविलेयुजांयुनाकृत्यकायय
 जांमनाममामिति॥मनश्चयुजाथमनंकयुमि॥मथाव॥प्राविमुलपुलायी॥मनश्च
 महुलमथागमास्युनिवाधमसांस्त्राविनानांजिनानांयुजाथमनंकयुमि॥मथाव
 स्वदयचनुवजयुविष्यामिनावा॥मनश्चयुमहुलयुजादवीनांवीजाकनोविध्याया
 दिमि॥मनश्चयुजाथमनंकयुमि॥मथाव॥प्राविमुलपुलायी॥मनश्च

३

वज्रगल्लगन्धर्वनंकुनूरस्वाहा॥ उं वृ वज्रमालमालावर्नंकुनूरस्वाहा॥ उं वृ
 कधूपधूपावर्नंकुनूरस्वाहा॥ उं वृ वज्रदीपदीपावर्नंकुनूरस्वाहा॥ उं वृ व
 जामृतवृजानवद्ययूजांकुनूरस्वाहा॥ उं वृ वज्रनाजाकनाकनरुलावर्नंकुनूर
 स्वाहा॥ उं वृ वज्रलास्यवज्रावधयूजांकुनूरस्वाहा॥ उं वृ वज्रलास्यघण्ट
 मयूजांकुनूरस्वाहा॥ उं वृ वज्रवायवाययूजांकुनूरस्वाहा॥ उं वृ वज्रनृत्यन
 त्ययूजांकुनूरस्वाहा॥ उं वृ वज्रगीतगीतयूजांकुनूरस्वाहा॥ उं वृ वज्रका
 मवज्रवृद्धवाधिसत्वानां कौशिकदीनां वज्रसूत्रयूजांकुनूरस्वाहा॥ ॐ
 मरुतयदेर्मनामयीयूजामिति॥ ततः प्रार्थयन्मन्त्रिकस्तुकादिकंमदत्तमहाक

ल्यनूरस्त्रीठा वृद्धयूजायनस्यम॥ दहिदिव्यानिपूष्यानि वरूगंभारुमानिवा। दहि
 ल्गन्धीषकादिनिगन्धधूपायमरधूना॥ वृ नूतवद्यवस्तुनि विविधानिरुलानिवा
 । वामलानिबुजानिवा विगतानि मरुद्विक॥ महाविकामसिख्य वृद्धयूजाय
 नस्यम॥ दहिदहियुदीयानां मालाकिमिलमर्दनी॥ मधिनन्तारवधनि सुफन
 त्रानियानिवा॥ धर्मगन्धामरुगद मुखवायानियानिवा॥ दहिमतानि सर्वाणि वृ
 द्धयूजायनस्यव॥ धर्मगन्धामरुगद रुक्मवायानियानिवा॥ दहिसर्वाणि मान्ययव
 द्धयूजायनस्यम॥ निर्मायदहिमयूष्यानि ॥ कसिंहयस्तन॥ नियानिगानिगक
 नतधमनियानियास्यह॥ ननदवास्तनाही ४ स्वकीयासम्यदामून॥ दहस्तथायदा

[illegible]

नमः॥ ॐ अ० कात्यायन नमः॥ ॐ अ० वज्र सत्त्वाय नमः॥ ॐ अ० वज्र धर्म चक्राय
 नमः॥ ॐ अ० यक्ष पात्र मिताये नमः॥ ॐ ति॥ नरि मर्त्य पदे वज्र घाता मि कात्याय न्या
 सि दद्यात्ता गतः॥ योज कज नाय क्रया मलु ल मध्य स्थि तरु ग वत्स मूख दि ग्वि रा ग स्य पूर्व त्वा न
 योज का दि मूख दि ग्वि रा ग स्य रु र ग र्ग वेः॥ यश्चि मत्वा तं मूखा दि योज यत्॥ तथैव य न मा दि
 वृक्ष व रु र्ग दि ग्वि रा ग म नां स य स्या रि मूखा त वत्॥ स वि रा ग य न स्य म लु लं य य व र्ति त मि
 ति॥ ला क ष्म रु सं स्थि त स त्व रा ष्म रु य नि द्वी पं सु र्या द या रु म न व ज्ञ त्वा दि ना म नी य म
 त्वा न॥ तथैव लघू काल वक्त्र ग रु वा क॥ स र्व वा वा रु व रु र्व नि त य र्ग लो ल वा जा रु
 नी पृ र्व सु र्या द यः॥ स्या त्ति त्स म स म य न यश्चि म ना रु म ती ति॥ त ग श्च का वा य क्र ना ना

वक्त्रलक्षणां नारुणां चार्थविद्वां यं वक्तुं समुद्रगकवल्लोकाध्वजकवर्हिस्मन्निवः
निवयुनस्त्रितयवविदहादिदिग्मतकृष्णगृन्मदिव्यवस्त्रयादीयगृन्मयाः प्रतितितियत
त्राद्वर्हिन्मगुलवक्त्रमध्वस्त्रितस्य प्रतितितियतयूवादिदृक्कादिविरुवकादिलकलः
स्यरुगवतासावता॥ समयपूजायानुपूजकजनाहिलावादिदवसकलकम्मसमाश्रयः
नविरुवकास्यवपाध्वानागृह्णदीपादिदवताः पूर्वोदिष्युजयता॥ ॐ अंः कृष्णदीपाः
येनमशापूर्व॥ ॐ अंः नकादीपायेनमः॥ दकिन॥ ॐ अंः ध्वजदीपायेनमः॥ यश्चिमा ॐ
आःपीतदीपायेनमः॥ डरुवा॥ नृनिगृष्टिकमनदिक्का ॐ हाः यदीपायनमः॥ वायुवा
ॐ हंः सधागायेनमः॥ नृभत॥ ॐ हंः मनीविकायेनमः॥ नशय॥ ॐ हंः धूमायेनमः॥

मूरना॥ नृनिर्द्वानकमनविदिक्का॥ ततश्चतुष्कानदवीपृष्ठेषु॥ ॐ हं विक्तामनेयतम
॥ मूरना॥ ॐ अंः धर्मगुणेनमः॥ नशय॥ ॐ ॐ धर्मनंखायेनमः॥ नृभत॥ ॐ हाः
कल्पवृक्षायेनमः॥ वायुव॥ विरुवाक्कायहनरदततगायगवताववस्त्रनयूनः॥
ॐ वृद्धायनमः॥ ॐ धर्मायनमः॥ ॐ सुधायनमः॥ ॐ स्वाहाविकायनमः॥ ॐ धर्म
कायनमः॥ ॐ संशगकायनमः॥ ॐ निम्मानिकायनमः॥ ॐ हूनवकायनमः॥
ॐ विरुवकायनमः॥ ॐ वाक्कायनमः॥ ॐ कायवकायनमः॥ ॐ चतुर्विमाकस्थान
मः॥ ॐ चतुर्वक्त्रविहानस्थानमः॥ ॐ नयविहवाधियाकि कधर्मस्थानमः॥ ॐ चतु
वर्णातिगतसहस्रधर्मस्थानमः॥ ॐ सर्वधर्मदणकस्थानमः॥ ॐ चतुर्वयाय

[illegible][illegible]

अहं लिखयं वा ॥ तनादक्रियेन दाल वा म ॥ उं अ व ज या घ य न मः ॥ ततः य व्वादि दान द कि
 न मः ॥ उं न र व ग म्भ य न मः ॥ उं अ न क्रि ति ग र्ग य न मः ॥ उं ड लो कं च वा य न मः ॥
 उं अ ल स व ति व न घा वि क मि न न मः ॥ ततः य व्वादि दान वा म ॥ उं अ स म न र डाय
 न मः ॥ ततः उं रु न दान वा म ॥ उं आः न द व ज्ञा य न मः ॥ तना वा य यो दि का ल म्भ ॥
 उं अ ल ग न्ध व ज्ञा य न मः ॥ उं डी नू प व ज्ञा य न मः ॥ उं आ नू व स व ज्ञा य न मः ॥ उं नूः
 स्य न व ज्ञा य न मः ॥ ततः य व्वादि दान वा म ॥ उं आः ध म्भ म्भ उ व ज्ञा य न मः ॥ ततः य व्वादि
 दान म ॥ उं य वि द्वा न य न मः ॥ ततः उं लाः रु म्भ य न मः ॥ उं नू य रु
 म्भ का य न मः ॥ उं वा म न्थि न मः ॥ उं व य रु म्भ का य न मः ॥ उं य ज म्भ य न मः ॥ उं ल य

नी

मा रु का य न मः ॥ उं याः अ वि ति यो यि न मः ॥ ततः उं रु स व न्धि य व्वादि दान वा म ॥ उं अ
 व ज्ञा वा य न मः ॥ ततः य व्वादि दान व र्हि य म्भ वि दि का म्भ ॥ उं अ व ज्ञा ग म्भ य न मः
 मः ॥ उं रु व ज्ञा धू या य न मः ॥ उं य व ज्ञा मृ ता य न मः ॥ उं रु व ज्ञा ला स्या य न मः ॥
 तना या रु म्भ ल स व न्धि य न ता म्भ न्ध ॥ उं रु व ज्ञा गी ता धू य न मः ॥ उं रु व ज्ञा द कि न ता
 न्ध ॥ उं रु व ज्ञा कृ मा य न मः ॥ ततः य व्वादि दान वा म ॥ उं रु व ज्ञा ला
 स्या य न मः ॥ उं रु व ज्ञा ना जा क ता य न मः ॥ उं रु व ज्ञा दी पा य न मः ॥ उं रु व
 ज्ञा ला य न मः ॥ ततः उं रु न ता न्ध ॥ उं रु व ज्ञा नू त्या य न मः ॥ अथ अ व
 आ न उं का न द ला क स वी जा क ना सि य व्वादि दान वा म ॥

गधमवाङ्करी लघुतायेनमः॥ उवावदुलखायेनमः॥ उंवीनमधनवदनायेनमः॥
उंयुहंसवल्हयेनमः॥ उंरूधयेनमः॥ उंयूपमभयेनमः॥ उंयुगाननयायेनमः॥ उं
वःविमलगमधनायेनमः॥ तनानेय ॥ उंक्रःवजकोमायेनमः॥ तथा॥ उंक्रुयदायेन
मः॥ उंवाश्रुनभयेनमः॥ उंवीकूमायेनमः॥ उंनृमृगयतिगमनायेनमः॥ उंक्रुनलमा
लायेनमः॥ उंनृसूतनायेनमः॥ उंनृकीनायेनमः॥ उंनःरदायेनमः॥ एता॥ एता॥ उंक्र
वजवल्हयेनमः॥ तथा॥ उंक्रिधियेनमः॥ उंयामायायेनमः॥ उंयुकीलीयेनमः॥ उंयु
लभयेनमः॥ उंकीसूयनमविजयायेनमः॥ उंयुधीजयायेनमः॥ उंयुधीजयलीयेनमः॥
उंयःधीयस्तेनमः॥ अथवापधनदवीमृजयित्वा॥ उंरिययीयुदीयुयुयंरीमाय

अथदवीयानमः॥ अथननय्याजलिन्दयात्॥ एवंसर्वज्ञतादक्रितज्ञानवासवदि
कायांयकिकुमवा॥ उंक्रःमात्रलकृयेनमः॥ उंखःमेथूनकृयेनमः॥ उंगःगनुयनः
कृयेनमः॥ उंघःसकायकृयेनमः॥ उंढःसर्वमिकादनकृयेनमः॥ तथापूर्वज्ञानस्य
सथा॥ उंवःविद्वषकृयेनमः॥ उंरुःअंशुककृयेनमः॥ उंजःउवाटनकृयेनमः॥
उंमःस्यलकृयेनमः॥ उंरुःउत्सृष्टकृयेनमः॥ तथादक्रितज्ञानसथा॥ उंढः
स्फातनकृयेनमः॥ उं०ःअरुनकृयेनमः॥ उंउःअजतकृयेनमः॥ उंरुःआरुषीकृ
येनमः॥ उंघःसयमकृयेनमः॥ तथावामज्ञानसथा॥ उंघःपोषिककृयेनमः॥ उंरुःस
वल्हकृयेनमः॥ उंवःमृदुववतकृयेनमः॥ उंरुःवन्धनकृयेनमः॥ उंमःदानकाकाः

ASHA ARCHIVES 3621

କାମ ଦେବ ଧର୍ମାବିଦି

୧୩

ASHA ARCHIVES

3621

दीन दत्त पुस्तकालय

ठकायतमः॥ ततावाकलुखवदिकायामिच्छदवीपूजवले नववीजः॥ किरुसानूखानु
वउयतीच्छादवीपूजयत॥ तयायंकुमनदक्रिषदावनामवदिकायांयकि॥ उंक
मानवयतीच्छायेतमः॥ उंकंमेधूनयतीच्छायेतमः॥ उंकंलुयनयतीच्छायेतमः॥ उंक
यंसकापयतीच्छायेतमः॥ उंकंमर्षीक्रीदनयतीच्छायेतमः॥ तथयूर्ध्वजानमववि
दवादिपुतीच्छाववर्गवीजनयवसू॥ जवदक्रिषदावनामवदिकायांयकि॥ उंक
कमन॥ यूननवयूर्ध्वदिदिग्भायावामवदिकासुदक्रिषवदिता॥ अथवा॥ उंकवः
मादीकत्वासर्वाथववीजानिमध्वादत्वाकमक्रिषत्यतीच्छादवीयानमः॥ ॐतिपुष्ट्या॥
लिंदद्यात्॥ ततः॥ पूर्वादिमानास्त्वनष्टा॥ उंकंधर्मवकायतमः॥ उंकः॥ रउघटाः

यनमः॥ उंकंदून्दूयेतमः॥ उंकः॥ कल्यककायतमः॥ ततः॥ उंकसंपूर्व॥ उंकवजाओ
तमः॥ ॥ ततस्क्रुदाओपूर्वादिग्भाभनष्टा॥ उंकखगघदवजस्तानायेतमः॥ उंकय
नवलवजभूकनास्यायेतमः॥ उंकयनवलवजयाद्यास्यायेतमः॥ उंकमथवजकवज
जम्बूकास्यायेतमः॥ ततः॥ पातालसंपश्चिम॥ उंकनीलायेतमः॥ ततावायवादि
ग्भाभनष्टा॥ उंकमथदधनगनूडास्यायेतमः॥ उंकपरुवरुमडलूकास्यायेतमः॥ उंक
ठठठलगृध्रास्यायेतमः॥ उंकवज्जमज्जकाकास्यायेतमः॥ ततायेवग्भाभना
धनवलयु॥ उंकसर्वरुतस्थानमः॥ ततः॥ पृथीवलयु॥ ॐ॥ अथवा॥ उंकवजवल्दायनमः॥
नष्टा॥ उंकः॥ वज्जसूयायेतमः॥ ततः॥ उंकनाताविज्ञयुजानत्यग्गनीननामविष्णु

ह्रस्वाकारि गुणदवता गहस्या नमः॥ वाक्कदवता पूजयन् ॥ ॐ वज्रवृद्धी
प्रयनमनमः॥ ॐ वज्रमकीलाय नमः॥ ॐ वज्रगुप्ताय नमः॥ ॐ वज्रवृद्धस्य
नयनमः॥ ॐ वज्रनीधनाय नमः॥ ॐ वज्रकनकवनमः॥ ॐ वज्रकनकवनमः॥ ॐ वज्रलोकाय
नमः॥ ॐ वज्रधूमाय नमः॥ ॐ वज्रागह्याय नमः॥ ॐ सर्वविक्रान्तप्रस्थानमः॥ ॐ वज्रदादनाय
नमः॥ ॐ वज्रपाठकलायाः॥ ॐ वजनदिकम्बनाय नमः॥ ॐ वज्रमहाकालाय नमः॥
ॐ वज्रवृद्धकलाय नमः॥ ॐ वज्रहृदि नमः॥ ॐ सर्ववज्रकृत्याय नमः॥ ॐ
सर्ववज्रदमीत्याय नमः॥ ॐ दात्रिणे नमः॥ ॐ सर्वसिद्धिस्थानमः॥ ॐ गुणवृद्धवा
धिसंख्याय नमः॥ कतः॥ आदित्यदमरुहलमवकवृत्तयन्ता नारायणमरुहः॥ नमो व

जसत्वाय नमः सर्ववृद्धवाधिसंख्या। नमः कायवृत्ताय ४ नमो विन्धमाय ४ नमो व
दवाधिसंख्याय ४ नमो वज्रजकिनी ४ नमो वज्रवृत्तकालवजाय १ वज्रवृत्तवली
कनाय २ माददनी नववृत्तनीनाय ३ मा नकुमददया का मसित नकु व न दाय ४ कस्रनक
सित क म्भयन नील सित योन नकु ड कु कनाय ५ मा मधुवाय ६ कस्रनक सित सयन नकु
यन द्वादशकुजाय ७ वज्रवृत्तकनाय ८ वज्रवृत्तकनाय ९ वज्रवृत्तकनाय १० वज्रवृत्तकनाय
११ वज्रवृत्तकनाय १२ वज्रवृत्तकनाय १३ वज्रवृत्तकनाय १४ वज्रवृत्तकनाय १५ वज्रवृत्तकनाय
१६ वज्रवृत्तकनाय १७ वज्रवृत्तकनाय १८ वज्रवृत्तकनाय १९ वज्रवृत्तकनाय २० वज्रवृत्तकनाय
२१ वज्रवृत्तकनाय २२ वज्रवृत्तकनाय २३ वज्रवृत्तकनाय २४ वज्रवृत्तकनाय २५ वज्रवृत्तकनाय
२६ वज्रवृत्तकनाय २७ वज्रवृत्तकनाय २८ वज्रवृत्तकनाय २९ वज्रवृत्तकनाय ३० वज्रवृत्तकनाय

हं स्वाहा॥ ॐ वज्रगव्या ॥ ॐ स्वाहा॥ ॐ वज्रमात्रा ॥ ॐ स्वाहा॥ ॐ वज्रनेत्राय
ॐ स्वाहा॥ ॐ स्वादि मरुतयदं ॐ स्वादि मरुतयदि हि यज्ञां कुर्यात् ॥
मरुतयननयियायदं नादिकं कुर्यात् ॥ समन्वाह वरुमां ह ग व न श्रीका लवज
यस्य का कृत सकल काल गम रा व व कु सम गु ल ग न द व ना च र्क य न म र द ज न नि
उ न्मा क न व्रा जा न मा इ जा न मा धि क न का त्रि ना न्मा दि न म र्मु र म र्ति न स्तु द हि सूर्यः
य नि द ग या मि त द ह मि न य र्ति क दा व ना यि न के त्रि य वि वि ष ना द ग दि न्न न स ग न
स ग स ग न ग नि स ग न गि य प स्य क जि न ता म उ न क न स क न म (अ) म न्मा र्ज न्म क
मा स य स स म स य क वि क र्पां च कि य म्की ष ध र्म च र्क य व र्त्त ना या प व र्त्ति न ध र्म
व क्रा न स र्व वृ द्धा न्मा य या मि य त्रि ति वी षा न ग न दाय ना य ना न वि क र्क क न धी या न

मृष्यदि हीन विनयन ज्ञाना कान न मा य द न द म य नि व स थ स क न काल म ना कू ल मि
नि स क ल जि ना न या च ग स क ल धु रान्ना व ना न क क ल्य ना क ल द्वा न कि न शु न्ना ना
क न्ना रि त्र स म ल्य न्ना न्मा य म म द्वा स र्व लालि त व र्मु ग ग दि नि वृ द्ध य त्रि षा म या मि आ
मा ना क य स्य दा दि स क न जि न स न ज न स म र्द य य न स क न्ना य न व र्त्त ना य स म स्ता य ल्का न
य नि व र्त्त यो नि र्था न या मि स र्व स ल्वा ना क र्म स्या स्या व य वा धि व र्त्त मू ल्या द या मि व
जं द्य ध्मा व जं द्य ध्म के म्पां गु न्म यि मि न सा ध न या मी स व र्ज दान दा स्या मि व र्त्त जि न
व न स म र्थ आ न या म्पा व क्ता य ज्ञां र व र्त्त क वा मि स कू ट ज ल ज कू ल सं व न्ना य या मि स ल्वा
नां मा क र्क ना जि न ज न क कू ल वा धि मू ल्या द या मि ॥ कृत व न्म के त्रि य नि कू र्व नि जि न स

नवशुद्धविलेकप्रियादं निर्णयस्तु कित रुथा॥ निर्ममानि नर्दकाया यथावज्जघन
दयशमथे वादं मनासका विदप्रियामि सर्वे ॥ दार्तगालं कता वीर्य धार्तपल्लवैरका
गली। पतिधार्त वलं हननमताया नमिता ॥ पुनामाना विरिधीज निर्णयं यत्रियुजिता ॥
मथादं पुनयि व्यामि सदानं कीनमानसा ॥ सर्वसत्त्वधूममेजा क नूयामुदितामथा। उयका
लाक धर्मीनी सर्वदा मुममागय॥ दान के मधुना लाया अहं भूयै ममार्थगा। नित्यममत्य
वशीत्या लवयं वाधयधे नृधाम॥ प्राणिनां हि सेनसु यं काममिथ्या। चानिना। मृगालाव
धयानुयाये मुन्यं रिन्नरावर्धं॥ जरि ध्यादाद विना व कू दृष्टि नयिद्वेन ॥ आध्यामिक
धाने व किं पुनः कन (हमनि ॥ को कृत्यस्या नमिध्यामि। उी ह्ये मथसंगय ॥ नागद्वय

महाभाद मान कृगस्त्य जामिव॥ स्यात्क कामरुवा विद्या दृष्ट्या सव विवर्जित ॥ पुन्यदना
नावायान रिक्ता नरावका ॥ निर्वि (हमस्मि रुवनाथ वलकमदर्थ यत्रा गुनाथ न (ह
रुकि निर्हं नो रुवनां मम॥ सदाय नमु दृष्टि त्याद गयि व्यामि पुन्यनी संवृत्त्या नूय नमु
न पुन्यं संरा नमाद वा न॥ सर्वो यदि नु या व न ॥ कायविलेका धारु ना ॥ ग या पुन म ल (मि
॥ सखयामा द्रसा गाना ॥ दवा व र्धे काले न ग स्या सम्या रि नमु वा स्त्री गार वतु
लोके य वा नार वतु धमि क ॥ कि म्वा य न द स व ल ॥ य धं य धं ह लं म मा गनी न
वद दा मय सर्व्यां वाधिद न व॥ यत्कि विरु गता दृ ॥ न सर्व मयि य वा नी। वाः
धिसत्त्वगुरु ॥ सर्वे जगत्सत्त्विन मनु वा मूय कायायिकं दृ ॥ र्व विना दृष्ट न नयः

मिसं ध्यायजंनं यति ४ अनुवजं मात्मानं ह र्हासाद्विविक्त यत ॥ आह्लात द्वाग
मातं नु नागच्छ नं गृहं यून निति ॥ विक्षं नोया विधिं ननु यदलमि गुरुं मया ॥ न
नासु सकला लाक ४ सर्वे ह्म नराज नं ॥ ४० तिर गवत ४ श्री कालचक्र यज्ञा विधि ४
साय ४॥ ॥







